9.1 शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यक्तिगत निर्देशन (Personal Guidance at Different Levels of Education)

व्यक्ति की आयु में परिवर्तन होने के साथ-साथ उसकी वैयक्तिक समस्याओं में भी परिवर्तन होते रहते हैं। यही कारण है कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों–पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक जूनियर हाईस्कूल एवं कॉलेज तथा विश्वविद्यालय, पर वैयक्तिक निर्देशन के उद्देश्यों एवं विधियों में अन्तर पाया जाता है। अत: उपबोधक के लिए यह आवश्यक है कि उसे बालक की आयु के विभिन्न स्तरों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि वैयक्तिक समस्यायें मुख्य रूप से, मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से ही सम्बन्धित होती है।

(1) पूर्व प्राथमिक स्तर (Pre-Primary Stage)

शैशवावस्था व्यक्ति के जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था होती है, क्योंकि इसी अवस्था में डाली गई आदतें, व्यक्ति जब तक जीवित रहता है, तब तक यथावत ही रहती हैं। बालक पूर्व-प्राथमिक स्तर अवस्था में जो कुछ भी अपने परिवार एवं शिक्षालय में सीखता है, वही उस बालक भविष्य के अध्ययन एवं वैयक्तिक बातों का निर्देशन प्रदान किया जा सकता है। अपने मित्रों के साथ सहयोग तथा परस्पर मिल कर खेलते हैं। अत: इस स्तर पर वैयक्तिक निर्देशन का उद्देश्य बालकों को निम्नलिखित बातों को सीखने में सहायता देना है–

1. बालकों को कविता एवं कहानी कहकर उन्हें अपनी अभिव्यक्ति का अवसर उपलब्ध प्रदान करने में सहायता देना।
2. बालकों में उत्तरदायित्व निर्वाह करने की भावना का विकास करना जैसे–खिलौनों को यथास्थान रखकर, अपने परिवेश का उचित मूल्यांकन करने की दिशा में निर्देशन के द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
3. बालकों को स्वयं का तथा अपने परिवेश का उचित मूल्यांकन करने की दिशा में निर्देशन के द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
4. बालकों के लिए खेल एवं खिलौनों की समुचित व्यवस्था करना, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि खेल बालकों को, नेतृत्व की भावना विकसित करने, सहयोग की भावना का विकास करने तथा भावात्मक नियन्त्रण का प्रशिक्षण देने हेतु अवसर सुलभ कराते हैं।
5. बालकों की अपने स्वास्थ्य की देख-रेख करने में सहायता करना।
6. बालकों में उत्तम आदतों से निर्माण में सहायता प्रदान करना।

इन प्रयोजनों के अतिरिक्त *क्रो* एण्ड *क्रो* ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक *'एन इन्ट्रोडक्शन टु गाइडेन्स'* में इस स्तर पर व्यक्तिगत निर्देशन का प्रयोजन निम्नलिखित बातों को अधिगम करने में सहायता प्रदान करना बतलाया है–

1. स्वयं के हाथों से काम करके, गीतों का अनुसरण करके, कहानियों को अनुभव करके, स्वयं को व्यक्त करना एवं दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुनना।
2. पालतू जानवरों की देख-रेख करके, खेल की वस्तुओं का उनके स्थान पर रखकर, स्वयं के वस्त्रों की देखभाल करके, उत्तरदायित्व युक्त व्यवहार करना बालकों की सीखना।
3. परस्पर एक-दूसरे से मिलना तथा अपने अनुभवों का परस्पर आदान प्रदान करना, खिलौनों का आदान-प्रदान करना, नम्रता सीखना, क्रोध को नियन्त्रित करने की आदत का निर्माण करना, नेतृत्व करना सीखना तथा अनुयायी के रूप में समूह में उत्तरदायित्व की भावना का प्रदर्शन करना और खेल में ईमानदारी की भावना का प्रदर्शन करना।

(5) महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय (College and University)

इस स्तर पर युवक, प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसरित होने लगते हैं कालेज एवं विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के समक्ष विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं जैसे–विवाह सम्बन्धी समस्या, आर्थिक समस्याएँ इत्यादि। भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों पर, पाश्चात्य संस्कृति के पड़ने वाले प्रभाव ही इन समस्याओं का मुख्य कारण हैं। अत: इन समस्याओं के निराकरण के लिए छात्र वैयक्तिक निर्देशन की आवश्यकता को अनुभव करते हैं।

नैतिक एवं चारित्रिक विकास की दृष्टि से भी, इस स्तर पर, निर्देशन छात्रों की सहायता करता है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थी-वर्ग में स्वास्थ्य सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक दृष्टिकोण का विकास करने में सहायता प्रदान करना, व्यक्तिगत निर्देशन का इस स्तर पर एक महत्वपूर्ण कार्य है।

स्व-मूल्यांकन (Self Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks)–

1. पूर्व-प्राथमिक स्तर पर वैयक्तिक निर्देशन का उद्देश्य बालकों को ..... कहकर अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने में सहायता देना है।
2. वैयक्तिक निर्देशन का उद्देश्य बालकों में उत्तरदायित्व निर्वाह करने की ..... का विकास करना है।
3. प्राथमिक स्तर पर व्यक्तिगत निर्देशन का उद्देश्य बालकों में स्नेहपूर्ण एवं सुदृढ़ ..... का विकास करना है।
4. प्राथमिक स्तर पर बालकों को ..... के लिए प्रेरित करना।
5. व्यक्तिगत निर्देशन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर बालकों में ..... को विकसित होने से रोकना है।

3. छात्र एवं छात्रों को स्वयं को विचारों, भावनाओं एवं अभिरुचियों की अभिव्यक्ति हेतु अवसर प्रदान करने चाहिए।
4. इस स्तर पर बालकों में व्यवहार से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अत: शिक्षक को भावात्मक नियन्त्रण तथा सम्पूर्ण स्थिति को विवेकपूर्ण समझकर ऐसे अवसर उपलब्ध कराने चाहिए जिससे बालक स्व-अनुशासन सीख सकें।

क्रो तथा *क्रो* ने जूनियर हाई स्कूल पर व्यक्तिगत निर्देशन की व्यवस्था करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक बताया है।

1. अग्रिम शिक्षा के प्रति छात्रों को प्रोत्साहित करना तथा सक्रिय बनाना।
2. बालकों को श्रम के महत्व तथा जीविकोपार्जन के विभिन्न प्रकारों से परिचित करना।
3. विद्यार्थियों को इस तथ्य से परिचित कराना कि व्यक्तिगत समायोजन की समस्याएँ विकास की प्रक्रिया में सामान्य रूप से आती रहती हैं।
4. विभिन्न व्यवसायों के आरम्भिक अध्ययन में छात्रों को निर्देशन प्रदान करना तथा योग्यता एवं रूचि के अनुसार व्यवसाय की धारणा का विकास करना।
5. छात्रों को कुछ ऐसे व्यवसायों से परिचित कराना, जिनका साक्षात्कार उनको बाद में देना पड़ सकता है।
6. छात्रों को स्वयं तथा दूसरों के लाभ हेतु उत्तरोत्तर अधिक उत्तरदायित्वों को निर्वाह की प्रेरणा देना।
7. आवश्यकता अनुभव होने पर व्यक्तिगत परामर्श हेतु नि:संकोच रूप से उपस्थित होना।
8. रचनात्मक जीवन हेतु आवश्यक गुणों के विकास की प्रेरणा प्रदान करना।
9. वर्तमान जीवन की तथा भविष्य की योजनाओं के बारे में अपने अभिभावक, शिक्षक एवं उपबोधक आदि के मध्य सह-चिन्तन की आवश्यकता पर बल देना।

नोट्स अपने संवेगों पर नियन्त्रण रखने का निर्देशन भी पूर्व प्राथमिक स्तर पर ही बालकों को प्रदान किया जा सकता है।

(4) हाई स्कूल स्तर (High-School Stage)

हाईस्कूल स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी, किशोरावस्था में प्रविष्ट हो चुके होते हैं। यही समय होता है जब बालक के भावी जीवन की नींव रखी जाती है। इस स्तर के बालकों में, विचारों में परिवर्तन होने लगता है अत: हाई स्कूल स्तर पर वैयक्तिक निर्देशन का स्वरूप किशोर एवं किशोरियों की रूचियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही निर्धारित करना चाहिए। *क्रो एण्ड क्रो* ने हाई स्कूल स्तर पर वैयक्तिक निर्देशन के निम्नलिखित प्रायोजन बताये हैं–

1. पूर्व में आरम्भ किये गये स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा तथा शारीरिक कार्यक्रमों को यथावत रखने हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना।
2. विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करना कि, इस आयु में मानसिक अव्यवस्था पैदा होना अस्वाभाविक नहीं है।
3. अपने नागरिक एवं सामाजिक सम्बन्धों में विद्यालय का उत्तम नागरिक बनने में बालकों की सहायता करना।
4. अपने नागरिक एवं सामाजिक सम्बन्धों में विद्यालय का उत्तम नागरिक बनने में बालकों की सहायता करना।
5. किशोर एवं किशोरियों के परस्पर सम्बन्धों तथा यौन-कार्यों को, विवेकपूर्वक एवं नियंत्रित भावना से समझने के फलस्वरूप होने वाले मूल्यों के प्रत्येक विद्यार्थी को अवगत कराना।

शैशवावस्था व्यक्ति के जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था होती है, क्योंकि इसी अवस्था में डाली गई आदतें, व्यक्ति जब तक जीवित रहता है, तब तक यथावत ही रहती हैं।

(2) प्राथमिक स्तर (Primary Stage)

प्राथमिक स्तर पर बालकों की आयु 6 वर्ष से 11 वर्ष तक ही होती है। अत: इस आयु वर्ग के बालकों की विशिष्टताओं में दृष्टि रखकर ही, वैयक्तिक निर्देशन का गठन किया जाना चाहिए। क्रो एण्ड क्रो का कहना है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के कैलीफोर्निया राज्य के मोटेवेलों के विद्यालयों में, चलने वाले निर्देशन कार्यक्रमों को छात्रों को निम्नलिखित मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने का प्रयास किया जाता है।

1. *व्यावसायिक कौशल*–विश्व के कार्यों की सामान्य जानकारी।
2. *अवकाश काल के क्रियाकलाप*–व्यक्तिगत रूचियों तथा मनोरंजन के सम्बन्ध में।
3. *अनुशासन*–स्नेहयुक्त एवं सुदृढ़, आत्म-अनुशासन की ओर उन्नति।
4. *मित्रों तथा समाज स्वीकृति की इच्छा*–बालकों एवं प्रौढ़ों के बीच।
5. *आधारभूत कौशलों की जानकारी*–अधिगम तथा अवबोध की योग्यतानुरूप।
6. *उत्तम स्वास्थ्य*–पर्याप्त व सन्तुलित भोजन, अपेक्षित नींद एवं आराम।

इस स्तर पर, बालकों की उपरोक्त आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर ही व्यक्तिगत निर्देशन की व्यवस्था की जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त भी इस स्तर पर, निर्देशन के प्रयोजन निम्नलिखित हो सकते हैं–

1. बालकों में भावात्मक असन्तुलन को विकसित होने से रोकना।
2. प्राथमिक स्तर से ही बालकों में आत्म-अनुशासन की भावना का विकास आरम्भ किया जाना चाहिए। अनुशासन के वास्तविक उद्देश्यों को समझाने पर ही बालकों में आत्म-अनुशासन की भावना का विकास हो सकेगा। अत: बालकों को अनुशासन का महत्व समझने हेतु, विद्यालय की विभिन्न क्रियाओं में उन्हें भाग लेने का अवसर प्रदान करना चाहिए।
3. सृजनात्मक कार्यों के प्रति छात्रों में रूचि का विकास करना तथा रूचि के विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराना।
4. इस आयु में बालकों में खेल की भावना के आधार पर, सामाजिकता का विकास किया जाना चाहिए।
5. बालकों में शारीरिक स्वास्थ्य को देख-रेख तथा स्वच्छता की आदतों का निर्माण करने में सहायता प्रदान करना।

टास्क प्राथमिक स्तर पर बालकों की आयु कितने से कितने वर्ष के बीच होती है?

(3) जूनियर हाई स्कूल स्तर (Junior High School Stage)

किशोरावस्था से पूर्व की आयु के छात्र जूनियर हाईस्कूल स्तर पर अध्ययन करने वाले होते हैं। किशोरावस्था से पूर्व की आयु में बालकों के सम्मुख अनेक ऐसी समस्याएँ पैदा हो जाती हैं, जिनका समाधान, निर्देशन द्वारा ही किया जा सकता है। इस स्तर पर वैयक्तिक निर्देशन के निम्नलिखित उपयोग हो सकते हैं।

1. विद्यार्थियों को अपनी रूचि एवं योग्यतानुसार व्यवसाय की धारणा का विकास करने में सहायता प्रदान करना।
2. इस स्तर पर शिक्षक को इस प्रकार का नेतृत्व करना चाहिए कि इस आयु के सृजनात्मक, हठी, व्यग्र एवं सक्रिय बालक स्वयं के लाभ तथा समस्त समूह के लाभ हेतु कार्य कर सकें।

9.1 शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर व्यक्तिगत निर्देशन (Personal Guidance at Different Levels of Education)

व्यक्ति की आयु में परिवर्तन होने के साथ-साथ उसकी वैयक्तिक समस्याओं में भी परिवर्तन होते रहते हैं। यही कारण है कि शिक्षा के विभिन्न स्तरों–पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक जूनियर हाईस्कूल एवं कॉलेज तथा विश्वविद्यालय, पर वैयक्तिक निर्देशन के उद्देश्यों एवं विधियों में अन्तर पाया जाता है। अत: उपबोधक के लिए यह आवश्यक है कि उसे बालक की आयु के विभिन्न स्तरों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि वैयक्तिक समस्यायें मुख्य रूप से, मनोवैज्ञानिक विशेषताओं से ही सम्बन्धित होती है।

(1) पूर्व प्राथमिक स्तर (Pre-Primary Stage)

शैशवावस्था व्यक्ति के जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण अवस्था होती है, क्योंकि इसी अवस्था में डाली गई आदतें, व्यक्ति जब तक जीवित रहता है, तब तक यथावत ही रहती हैं। बालक पूर्व-प्राथमिक स्तर अवस्था में जो कुछ भी अपने परिवार एवं शिक्षालय में सीखता है, वही उस बालक भविष्य के अध्ययन एवं वैयक्तिक बातों का निर्देशन प्रदान किया जा सकता है। अपने मित्रों के साथ सहयोग तथा परस्पर मिल कर खेलते हैं। अत: इस स्तर पर वैयक्तिक निर्देशन का उद्देश्य बालकों को निम्नलिखित बातों को सीखने में सहायता देना है–

1. बालकों को कविता एवं कहानी कहकर उन्हें अपनी अभिव्यक्ति का अवसर उपलब्ध प्रदान करने में सहायता देना।
2. बालकों में उत्तरदायित्व निर्वाह करने की भावना का विकास करना जैसे–खिलौनों को यथास्थान रखकर, अपने परिवेश का उचित मूल्यांकन करने की दिशा में निर्देशन के द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
3. बालकों को स्वयं का तथा अपने परिवेश का उचित मूल्यांकन करने की दिशा में निर्देशन के द्वारा सहायता प्रदान की जानी चाहिए।
4. बालकों के लिए खेल एवं खिलौनों की समुचित व्यवस्था करना, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि खेल बालकों को, नेतृत्व की भावना विकसित करने, सहयोग की भावना का विकास करने तथा भावात्मक नियन्त्रण का प्रशिक्षण देने हेतु अवसर सुलभ कराते हैं।
5. बालकों की अपने स्वास्थ्य की देख-रेख करने में सहायता करना।
6. बालकों में उत्तम आदतों से निर्माण में सहायता प्रदान करना।

इन प्रयोजनों के अतिरिक्त *क्रो* एण्ड *क्रो* ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक *'एन इन्ट्रोडक्शन टु गाइडेन्स'* में इस स्तर पर व्यक्तिगत निर्देशन का प्रयोजन निम्नलिखित बातों को अधिगम करने में सहायता प्रदान करना बतलाया है–

1. स्वयं के हाथों से काम करके, गीतों का अनुसरण करके, कहानियों को अनुभव करके, स्वयं को व्यक्त करना एवं दूसरों की बात को ध्यानपूर्वक सुनना।
2. पालतू जानवरों की देख-रेख करके, खेल की वस्तुओं का उनके स्थान पर रखकर, स्वयं के वस्त्रों की देखभाल करके, उत्तरदायित्व युक्त व्यवहार करना बालकों की सीखना।
3. परस्पर एक-दूसरे से मिलना तथा अपने अनुभवों का परस्पर आदान प्रदान करना, खिलौनों का आदान-प्रदान करना, नम्रता सीखना, क्रोध को नियन्त्रित करने की आदत का निर्माण करना, नेतृत्व करना सीखना तथा अनुयायी के रूप में समूह में उत्तरदायित्व की भावना का प्रदर्शन करना और खेल में ईमानदारी की भावना का प्रदर्शन करना।